Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / October 2024 / Special Issue 14 Volume V (A)

October 2024
Special Issue 14 Volume V (A)

महात्मा फुले शिक्षण संस्था संचलित,
कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज, उरुण-इस्लामपुर
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

'भाषा और साहित्य का सामाजिक सरोकार: विविध आयाम'

कार्यकारी संपादक
डॉ.प्रकाश आठवले
हिंदी विभाग प्रमुख
कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज,
उरुण- इस्लामपुर

अतिथि संपादक
प्रो. डॉ. नितीन शिंदे
प्राचार्य
कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज,
उरुण- इस्लामपुर

सह-संपादक

प्रा. अश्विनी थोरात
हिंदी विभाग
कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज,
उरुण- इस्लामपुर

प्रा. डॉ. जाविद शेख
हिंदी विभाग
कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज,
उरुण- इस्लामपुर

Akshara Publication
Plot. 42 Akshara Publication Gokuldham Residency
Prerna Nagar Wanjola Road Bhusawal Dist.Jalgaon [M. S.] India 425201

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / October 2024 / Special Issue 14 Volume V (A)

Index

अ.न.	शोधालेख का शीर्षक	आलेख प्रस्तोता	पृ.क्र.
1	हिंदी कविता और सामाजिक सरोकार	डॉ.दिलीपकुमार कसबे	07
2	नासिरा शर्मा की कहानियों में चित्रित मुस्लिम नारी की स्थिति	डॉ.दस्तगीर बा.पठाण	10
3	'तीसरी ताली' उपन्यास में किन्नरों के प्रति सामाजिक सरोकार	प्रो. (डॉ.) भास्कर उमराव भवर	12
4	हिंदी कहानी साहित्य और सामाजिक सरोकार	डॉ.नितीन हिंदुराव कुंभार	15
5	मुक्तिबोध की कविता में अभिव्यक्त सामाजिक सरोकार	डॉ. वर्षाराणी निवृत्तीराव सहदेव	17
6	'शुतुरमुर्ग' नाटक में चित्रित राजनीतिक चेतना	डॉ. हेमलता विजय काटे	20
7	गुलकी बन्नो एक असहाय स्त्री	डॉ. सारिका आप्पा भगत	23
8	आधुनिक हिंदी कविता में सामाजिक सरोकार	डॉ. एन. बी. एकिले	26
9	दुष्यंत कुमार की गज़लों में सामाजिक चेतना	डॉ. शकिला जब्बार मुल्ला	30
10	संत रैदास की हिंदी कविताओं में अभिव्यक्त सामाजिक सरोकार	डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर	33
11	हिंदी उपन्यास साहित्य और सामाजिक सरोकार : मंजुल भगत के उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. वैशाली प्रशांत सामंत	36
12	हिंदी उपन्यास साहित्य और सामाजिक सरोकार	प्रा. अविनाश वसंतराव पाटील	38
13	मोहनदास का व्यक्तित्व निर्माण में संघर्ष	डॉ. विकास विलासराव पाटील	40
14	न्याय की दस्तक देता दलित साहित्य 'ओमप्रकाश वाल्मीकि के विशेष संदर्भ में	डॉ. जयसिंग मारुती कांबले	43
15	विदेशी भारतीयों की समस्याएं एवं सामाजिक सरोकार: 'हर हाल बेगाने' कहानी संग्रह के परिप्रेक्ष में	प्रा.किरण सदानंद भोसले	47
16	भारतीयता की पहचान' निबंध संकलन में चित्रित समाज	प्रा. डॉ अशोक बाळू पाटील	50
17	मनमोहन सहगल के उपन्यासों में नारी सशक्तिकरण	डॉ. सुनीता.रा . हुन्नरगी	53
18	अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक जीवन	डॉ. वृषाली महादेव माळी	57
19	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में सामाजिक सरोकार	प्रा. मनीषा मंडल	60
20	समकालीन कहानियों में सामाजिक सरोकार का शुक्लपक्ष	सिमरन श्रीवास्तव	62
21	'अपनी जमीं अपना आसमां' आत्मकथा में चित्रित सामाजिक यथार्थ	सारिका शंकरराव धुमाळ	65
22	मोहन दास कहानी में अभिव्यक्त सामाजिक सरोकार	हर्षदा बबन चव्हाण	68
23	डॉ. सादिका नवाब 'सहर' के उपन्यास 'कहानी कोई सुनाओ, मिताशा' में चित्रित सामाजिक सरोकार	सविता महादेव येवले	70
24	हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों में अंकित सामाजिक चेतना	श्रीमती,वैशाली महादेव जाधव	73
25	जया जादवानी के कहानी साहित्य में नारी विमर्श	श्रीकांत जयसिंग देसाई	75
26	कृष्णा सोबती के 'समय सरगम' उपन्यास में चित्रित वृद्ध समस्याएँ	श्री.महेश बापुराव चव्हाण	79
27	पुष्पमित्र के 'रेडियोकोसी' उपन्यास में अभिव्यक्त सामाजिक सरोकार	श्री. संतोष शंकर साळुंखे	82
28	मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में चित्रित नारी	शैला प्रल्हाद डुबल	86
29	'रंग दे बसंती' फिल्म में सामाजिक सरोकार	शितल दिपक चौगले	88
30	जयश्री रॉय के `मोहे रंग दो लाल` कहानी संग्रह में चित्रित सामाजिक समस्या	वैष्णवी संजय शिंदे	91
31	हिंदी उपन्यासों में चित्रित सामाजिक चेतना	डॉ.अमोल तुकाराम पाटील	94
32	गगन गिल की कविताओं में चित्रित नारी संघर्ष'	जयश्री प्रकाश खाड़े	97
33	दूधनाथ सिंह का कहानी साहित्य और सामाजिक सरोकार	श्रीमती. ज्योती एकनाथ गायकवाड	99
34	'लेडीज com. में चित्रित सामाजिक व्यंग्य'	प्रकाश महादेव निकम	102
35	हिंदी उपन्यास और सामाजिक सरोकार	लता अमित मंडोवरा	105

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / October 2024 / Special Issue 14 Volume V (A)

04

हिंदी कहानी साहित्य और सामाजिक सरोकार

डॉ.नितीन हिंदुराव कुंभार
हिंदी विभाग
डॉ.पतंगराव कदम महाविद्यालय, रामानंदनगर(बुर्ली) तह- पलूस, जि. सांगली(महाराष्ट्र)

शोध सार -: मृदुला सिन्हा आधुनिक युग की लेखिका हैं। उन्होंने अपनी समस्त कहानियों में आधुनिकता, सामाजिक विसंगतियों, आधुनिक बोध, मानवीय मूल्यों का विघटन, जीवन दर्शन, मशीनी युग, कुंठा आदि का सजीव चित्रण किया है। साहित्य एक ऐसा दर्पण है, जिसमे मानव जीवन का ही वर्णन नहीं, अपितु आस–पास के परिवेश का भी चित्रण होता है। साहित्यकार सामजिक प्राणी होता है। वह अपने युग के विचारों को एकत्र करके साहित्य के रूप में व्यक्त करता है। मृदुला सिन्हा जी का 'ढाई बीघा जमीन' यह कहानी संग्रह सन 2013 ई. में प्रकाशित हुआ था । इस कहानी संग्रह में उन्नीस कहानियाँ संकलित हैं। भारतीय चिंतन परंपरा से ओतप्रोत मृदुला सिन्हा जी की सभी कहानियाँ मानव जीवन को सुमार्ग दिखाती हैं। उनके सभी कहानियों में कहीं न कहीं जीवन मूल्य के साथ भारतीयता का पक्ष अवश्य जुड़ा हुआ दिखाई देता है। उनकी कहानियों में आद्योपांत जीवन के बोध के साथ साथ सामाजिक, राजनितिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का बोध होता है। अतः मृदुला सिन्हा की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ का मार्मिक अंकन करती है।

बीज शब्द :- सामाजिक, संबंध, मानव जीवन, यथार्थ, परिवार, दाम्पत्य जीवन, नारी।

आलेख :- परिवार सामजिक जीवन की पाठशाला है। सामाजिक जीवन में पारिवारिक जीवन का यथार्थ प्रमुख है। मनुष्य का यथार्थ जीवंतरूप परिवार द्वारा ही संपन्न हुआ है। परिवार सामाजिक जीवन की पहली कड़ी है। दाम्पत्य संबंध के गठन में परिवार का दायित्व महत्वपूर्ण होता है। श्री शम्भुरत्न त्रिपाठी के शब्दों में- "परिवार सामाजिक गुणों की निधि है इसमें सेवा, त्याग, प्रेम, सहयोग, सहनशीलता, आदि सब महत्वपूर्ण गुण है।"[1] मृदुला सिन्हा के विवेच्य कहानी "अनावरण" में सास बहू को एक दूसरे के प्रति समर्पण को चित्रित किया गया है। इस कहानी में सास और बहू दोनों एक दूसरे के प्रति समर्पित हैं। एक तरफ बहू के द्वारा उसकी महानता का अनावरण किया गया है तो वही दूसरी ओर सास अपनी बहू को उसके मंजिल तक पहुँचाने की भरपूर कोशिश करती है, और वह कामयाब हो जाती है। वे बहू से कहती है- एक दिन उन्होंने (सास) कहा, "प्रभाती! मेरा जीवन खाना बनाने में बीता है। पचास वर्षों से मैं सुबह-शाम खाना बनाती रही । परिवार और कभी-कभी मेहमान भी खाते रहे। कभी स्वादिष्ट, कभी बेस्वाद भोजन बना । आज तुम्हें नहीं दिखा या चखा सकती कि कब, कैसा खाना बनाया ! मेरे परिश्रम और मनोयोग से बनाए भोजन की हाँड़ी पंद्रह मिनट में खाली हो जाती थी । पर पढ़े-लिखे लोग जो कागज पर लिख देते हैं, वह कभी भी नहीं मिटता। तुम्हारा लिखा हुआ तुम्हारे नाती-नातिन भी पढ़ेंगे। हमारा काम अच्छा है, पर तुम्हारा काम हमसे अच्छा।[2] इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में पारिवारिक समरसता के लिए चार गुणों का वर्णन किया गया है। परिवार में सहनशीलता, स्नेहशीलता, श्रमशीलता और पारस्परिक विश्वास आवश्यक होता है। इन गुणों को सहेजकर रखने के कारण ही कहानी 'अनावरण' की नायिका सत्यवती देवी अपने परिवार का संचालन करती हुई सफल होती है।

'कटोरी' कहानी में बेटी को अपने मायके के प्रति निःस्वार्थ समर्पण और प्रेम का वर्णन है। परिवार के लोग अपनी विवाहिता बेटी से लगाव रखे या ना रखे परन्तु बेटी को अपने मायके से कभी भी स्नेह कम नहीं होता है। "दो वर्ष बाद ही भाइयों में बँटवारा हुआ। जमीन-जायदाद के बाद बरतनों के बाँटने की बारी आई थी। संयोग से मैं वहीं थी। भाभियों के नौकर अपने हिस्से के बर्तन उठाकर बड़े बोरे में कसने आ गए थे। पड़ोसी भी बँटवारे का तमाशा देखने आ गए। शाम ढल रही थी। कौआ के आने की कोई आस नहीं बची थी। मैनें कटोरी उठाकर कहा, "रुको, मैं भी बर्तनों में अपना हिस्सा लूँगी।" मेरे भाई-भाभियाँ एक दूसरे की आँखों में मेरे कथन का अर्थ ढूंढने लगे। मैंने चौथे कोने पर कटोरी रख दी। एक कूड़ी बढ़ा दी। कहा, "ईआ के बर्तनों में मेरे हिस्से में यह कटोरी आएगी।" और उनके द्वारा बर्तन उठाना प्रारंभ करने से पूर्व मैंने कटोरी उठाकर अपने पर्श में रख ली। बड़ी बोरियों की जरुरत नहीं पड़ी। पर मेरे पर्श का वजन बहुत बढ़ गया था। उसमे आजी ईआ और कौआ मामा भी समाए थे।"[3]

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में बेटी के नेक सोच, स्नेह और समर्पण को चित्रित किया गया है। जिस कटोरी को परिवार के बहू-बेटे ने बेकार समझकर फेंक दिया। उसी कटोरी को घर की बेटी सीमा ने अपनी आजी, ईआ और कौआ मामा का निशानी अपनें साथ घर लेकर आ गई। स्त्री-पुरुष का संबंध पारिवारिक ढाँचे की रीढ़ की हड्डी है। पारिवारिक जीवन का प्रमुख स्तम्भ दाम्पत्य जीवन है। विवाह के उपरांत पति-पत्नी नई आकांक्षाओं को सजाकर अपना दाम्पत्य जीवन आरम्भ करते हैं। यह वह सम्बन्ध है, जहाँ से अन्य संबंध उत्पन्न होते हैं। दांपत्य संबंध मुख्य रूप से पति-पत्नी की प्रकृति, आपसी समझ-बूझ तथा कुछ सीमा तक पारिवारिक

परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है। जब तक पति-पत्नी में आपसी प्रेम, स्नेह और विश्वास की नींव मजबूत रहती है, तब-तक दाम्पत्य सम्बन्ध मधुर बने रहते है। मृदुला सिन्हा की 'अनावरण' कहानी में स्त्री-पुरुष के संबंधों का यथार्थ चित्रण है। 'अनावरण' कहानी में प्रभाती कि सास अपने गाँव के सभी लोगों से परिचित थी। किस परिवार में लोगों के पारिवारिक संबंध कैसे है? सत्यवती देवी को मालूम था। कमला के उसके पति से संबंध अच्छे नहीं है। इस बात को प्रभाती की सास अच्छी तरह जानती थी। वे अपनी बहू से कहती हैं, "प्रभाती, आज जो कमला आई थी न, वह अपने पति के बारे में झूठ बोल रही थी। ऐसा भी कहीं हुआ है! मुझे लगता है कि कमला में ही कोई दोष है। ताली दोनों हाथों से बजती है। मेरा मन कहता है कि उसका पति निर्दोष है।"[4] अतः यहाँ स्पष्ट होता है कि कमला और उसके पति का संबंध अच्छे नहीं थे। यह बात सत्यवती देवी जानती थी। अतः स्त्री-पुरुष के संबंध में विश्वास का होना अति आवश्यक है। 'कहानी औलाद के निकाह पर' में स्त्री-पुरुष के संबंध इतने गहरे होते हैं कि लेखिका के कई बार प्रश्न करने के बाद साइदा कहती है, दीदी "जिसका मियाँ दुलारे, उसे कौन फटकारे!" "तब की बात और थी। लगातार चार बेटियों के जन्म होने पर तो जरुर नाराज होता होगा। तुम्हें भला-बुरा भी कहता होगा।" मैंने कहा। मेरा खोजी मन उसके मियाँ के अन्दर खोट निकालने में लगा था। साइदा दोनों कान पकड़कर कहने लगी- "तौबा-तौबा! झूठ बोलूँगी तो पाप लगेगा। मेरे शौहर किसी और मिट्टी के बने हैं। उनकी बात ही जुदा है। वे दूसरे मर्दों की तरह नहीं हैं। मेरी चौथी बेटी के जन्म पर भी वे बोले- अल्लाह ताला की देन है। इसका अपमान मत करना। रोना-धोना भी नहीं। शिवजी के मंदिर वाले पंडित जी कहते हैं- बेटी लक्ष्मी होती है।"[5] इस प्रकार प्रस्तुत कहानी से यह साबित होता है कि साइदा के पति उसे बहुत प्यार करते हैं। दोनों को एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास है। सइदा के वैवाहिक जीवन के पड़ाव इतने मनभावन थे, कि लेखिक उसे सुनकर वही अटक जाती है। वह साइदा से कहती है हर स्त्री-पुरुष का संबंध तुम्हारे जैसा ही सुखमय हो। नारी जीवन की आधारशिला है। उसके बिना हर रचना अधूरी है। नर और नारी दोनों मिलकर ही सृष्टि की रचना करते हैं। भारतीय संस्कृति में नारियों को गरिमामय स्थान प्राप्त है। नारी के अभाव में मानव जीवन अधूरा और नीरस हो जाता है। जिस प्रकार तार के बिना वीणा और अधूरी या पहिया के बिना रथ बेकार होता है। ठीक उसी तरह नारी के बिना पुरुष और घर बेकार होता है। साहित्य के अनेक विधाओं में नारियों का अनेक रूप मिलता है। 'अनावरण' कहानी में नारी जीवन के सहयोग को दर्शाया गया है। इस कहानी में एक तरफ बहू के द्वारा सास की प्रतिमा का अनावरण किया जाता है। वहीं दूसरी ओर बहू को उसकी मंजिल तक पहुँचाने का भी अनावरण होता है। मैंने कहा, "प्रभाती सायंकाल जिस प्रतिमा का अनावरण हुआ, वह तो प्रस्तर थी। अभी रात्रि के चार घंटे लगातार जो अनावरण तुमने किया है, वह स्व० सत्यवती देवी की विशाल प्रतिमा तुम्हारे अन्दर समाई है, समाई रहेगी। यह जीवंत प्रतिमा है। अनावृत नहीं है तो क्या! उसका अनावरण तो तब तक होता रहेगा, जब तक तुम हो। तुम्हारी बेटियाँ भी अनावरण करती रहेंगी, उनकी संताने भी। ऐसे ही अनावरण से तो पीढ़ियाँ सँवरती हैं। व्यक्ति सात पीढ़ियाँ आगे भी जिंदा रहता है।"[6] उपर्युक्त कहानी में प्रभाती देवी पढ़ी लिखी तो नहीं थी किन्तु उनकी सोच बहुत ऊँची थी। जिसके फलस्वरूप उन्होंने अपनी बहू के जीवन को खुशहाल बनाने के लिए साथ दिया। कहते हैं कि औरत ही औरत की दुश्मन होती है। इस कहानी से यह भी ज्ञात होता है कि औरत ही औरत को ऊँचा भी उठा सकती है। जिस तरह से प्रभाती देवी के नहीं चाहते हुए भी उनकी सास ने उनको मंजिल तक पहुंचा ही दिया।

निष्कर्ष :- निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि समाज की संकल्पना का मूल आधार संवेदना, सौहार्द व संस्कार है। यही तथ्य समाज में सामाजिक व व्यक्तित्व विकास की आधारशिला है। समय और परिस्थितियों के अनुसार व्यक्ति में परिवर्तन होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, किन्तु संस्कारों से निर्मित व्यक्ति द्वारा विकसित उच्च आदर्श समय के परे रहकर समाज के प्रेरणादायी बन जाते हैं। हमारे परिवेश में प्रचलित अनेक लिखित और मौखिक कथाकारों के अनेकों आदर्श हैं। सामाजिक जीवन में प्रचलित कहानियों ने समाज निर्माण में विशेष योगदान दिया है। सामाजिक संरचना में सामूहिक जीवन पद्धति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ले जाने वाली कहानियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी सदियों पहले थी। जनमानस में संस्कारों और संवेदनाओं के प्रवाह का माध्यम कहानियाँ ही हैं। अतः हिंदी कहानी साहित्य और समाज का अटूट संबंध है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. डॉ० सीताराम जायसवाल, समाज पर साहित्य का प्रभाव, नवनीत पुब्लिकेशन लि. अहमदाबाद, सन, 2012. पृष्ठ -15
2. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन (रामायणी काकी,) गंगा प्रकाशन, नई दिल्ली,सन 2013, पृष्ठ सं०-144, 145
3. वही,(कटोरी), पृष्ठ सं-103, 104
4. वही.(अनावरण), पृष्ठ सं०-21
5. वही,(औलाद के निकाह पर), पृष्ठ सं०-34
6. वही, (अनावरण), पृष्ठ सं०-23